वापसी

सतीश बलराम अग्निहोत्री

हरि भला ऐसे मुवक्किल को कैसे छोड़तीं, यह केस तो ऐतिहासिक हो जाएगा। शोहरत... शोहरत की पूरी गारंटी! वैसे भी उन्हें और दौलत में खास दिलचस्पी नहीं थी, दौलत तो ढेरों कमा ली थी। शैलायन की बातों को उन्होंने गौर से सुना, उनके तर्कों में वज़न था। ओलम्पिक टीम में कोई भी नागरिक भाग ले सकता है और वे अभी भी भारतीय नागरिक थे, बैंक का खाता था जहाँ से वे दस्तखत कर पैसे निकालते थे, राशन कार्ड पर बाकायदा उनका नाम था, राशन मिलता भी था, न उनकी नागरिकता किसी ने रद्द की थी न वोटर लिस्ट से उनका नाम कटा था।

"यह मुद्दा मुझ पर छोड़ दें प्रोफेसर, आपका केस मेरे ज़िम्मे। पर प्रश्न यह है कि मामला उठाया कहाँ से जाए। क्या ओलम्पिक एसोसिएशन ने आपको कोई लिखित मनाही भेजी है?"

"नहीं, लिखित तो प्राधिकरण ने भी नहीं भेजा। वैसे मैं उन्हें लिख रहा हूँ कि वे मना करने की वजह बताएँ।" शैलायन ने कहा।

"वह तो आप कर ही डालें पर हमारे हाथ किसी तरह एसोसिएशन के कागज़ात लग जाएँ..."

"लेकिन वह तो गोपनीय..."

"सरकार में कुछ भी गोपनीय नहीं होता प्रोफेसर, ये आप मुझ पर छोड़ दें।" हरि जी ने बाईं आँख दबाते हुए बात खत्म की।

शैलायन को विदा करने के बाद उन्होंने कुछ देर इस विषय पर सोचा। ओलम्पिक एसोसिएशन का पत्र हथियाने का एक ही रास्ता था 'धमाका'। *दैनिक धमाका* अपनी खोजी पत्रकारिता के लिए प्रसिद्ध था, खासकर जब से उसके सम्पादक श्री राकेश पुरी ने काम सम्भाला था। उसकी यह साख और भी बढ़ गई थी, सत्ता पक्ष उनसे काफी आतंकित रहता। न जाने कब किस मंत्री, कब किस अधिकारी को धोबी पछाड़ दे मारे। कहा जाता था कि उन्होंने अपने बेडरूम में शिकार किए गए व्यक्तियों के फोटो टांग रखे थे।

एडवोकेट हरि से जब पुरी ने मामला सुना, उनकी आँखों में चमक आ गई। यार, यह तो स्कूप है! पूरा स्कूप! अब तू देखती जा। हाँ! उस पत्र को हथियाकर क्यों अपना व्यवसायिक ईमान बिगाड़ेगी। अखबार से ही कॉपी ले लेना।" आनन-फानन में उन्होंने अपने चेलों को काम पर लगा दिया।

पर इस स्कूप में और भी कई सम्भावनाएँ थीं जिन्होंने राकेश पुरी की ललक और बढ़ा दी थी। विपक्ष इस मामले को अगर राष्ट्रीय स्तर पर उछाल दे? वह भी युवा संगठनों के ज़रिए? अरे वाह! उन्होंने खुद की पीठ थपथपा डाली। राष्ट्रीय अस्मिता, खेल-कूद और युवा चेतना - धाँसू कॉम्बिनेशन है! अगर तीर लग गया तो बस पौ बारह, और नहीं भी लगा तो स्कूप का तुक्का हाथ से कहीं नहीं जाना। योजना सावधानी से बनानी होगी, आज के अखबार में स्कूप, फिर तीन दिन विभिन्न संगठनों के बयान, दो पहले से लिखे लेख, सरकार की संवेदनहीनता और निष्क्रियता पर टीका, चौथे दिन से मोर्चे - बस मार दिया पापड़ वाले को! खेल मंत्री भी परसों से एक सप्ताह के दौरे पर विदेश में होंगे। परसों तो नहीं, चौथे रोज़ तक मसाला ज़रूर तैयार हो जाएगा।

"ता ऊपर सुल्तान है, मत चूको चौहान..." कुल मिलाकर राकेश पुरी जी ने अविनाश कुमार को यही सन्देश दिया था। अविनाश कुमार, जो उभरते हुए युवा नेता के रूप में विपक्ष में ख्याति पा चुके थे, उनकी संगठन क्षमता और पैनी बुद्धि को पहले ही परखकर राकेश पुरी जी उन्हें विश्वविद्यालय से ही ले उड़े थे। अविनाश ने इस मुद्दे की अहमियत को तुरन्त पहचान लिया था। यह मौका हाथ से जाने नहीं देना था। इसमें चित भी मेरी, पट भी मेरी। अगर सरकार मान जाए तो क्रेडिट मिलेगा, न मानी तो आन्दोलन का मुद्दा मिलेगा। उन्होंने राकेश पुरी जी को आश्वस्त किया और काम में जुट गए। समय बहुत कम था।

* * *

पर कहते हैं न 'तेरे मन कछु और है, कर्ता के कछु और'। कर्ता ने इस बार कुछ और ही सोचा था। निमित्त बने

थे खुफिया विभाग के आर.आर. उर्फ डैडी पाटिल। डैडी पाटिल को शायद ही किसी ने हँसते देखा होगा। हद-से-हद वे मुस्करा देते थे। उनके चेहरे पर सपाट भाव स्थाई रूप से मौजूद रहता था। पर उसी सपाट चेहरे के पीछे उनकी अनगिनत सफलताएँ छिपी थीं। अपने काम में वे धीमे पर काफी गहरे थे। और छोटे-से-छोटे मुद्दे को वे अनदेखा नहीं करते थे। इसी विशेषता ने उनके लिए सफलता के नए आयाम खोल दिए। हालाँकि, इसी विशेषता का उनके दोस्त लोग मज़ाक उड़ाया करते थे।

अविनाश कुमार को उन्होंने कब से नज़र में रखा था। "सर उभर जाने के बाद आदमी कई नकाबों में छिप जाता है, टोह तभी से लेनी चाहिए जब वह उभर रहा हो।" इस नसीहत पर न जाने कितने नौजवान सरों ने मुँह बिचकाया हो पर पाटिल का यही दर्शन था।

और यह दर्शन आज फल लाया था। पाटिल अपने सामने रखे अज्ञात लोगों की बातचीत के टेप को घूर रहे थे। मामला कुछ था ज़रूर, महत्वपूर्ण भी और तत्काल ध्यान देने जैसा। पर पूरी बात उनकी समझ में आ नहीं रही थी। उन्होंने फिर से टेप ऑन किया।

"हाँ-हाँ, हर काम एकदम तेज़ी-से होना चाहिए, घड़ी के काँटे जैसा! स्कूप के दूसरे ही दिन अखबारों में हमारे बयान आ जाने चाहिए! प्रोफेसर के पक्ष में चौथे दिन विरोध प्रदर्शन की घोषणा, अगले दिन पाँचों महानगरों में जुलूस। हाँ, ट्रेक-सूट जुलूस का आइडिया बहुत ही अच्छा रहेगा! कुछ नहीं तो राजधानी में तो इन्तज़ाम हो ही जाएगा। माँग खेल मंत्री के बयान की ही रहेगी, सचिव वगैरह कुछ नहीं यार। मंत्री! और वे तो होंगे विदेश में।" एक हल्के-से कहकहे की आवाज़।

"जब तक वे वापस आएँगे, चिड़िया खेत चुग गई होगी। अरे, प्रोफेसर के इशू पर सारी जनता की सहानुभूति हम लोगों के साथ रहेगी, देख लेना। अरे, मीडिया कवरेज की फिक्र मत करो। धमाका हो जाएगा। तो फिर शाम को मिलते हैं।"

कुछ तो मामला ज़रूर था। पाटिल सोच में पड़ गए। देशव्यापी मुद्दा है पर यह प्रोफेसर कौन है जिसे हर कोई जानता है और सहानुभूति... क्या खेल संस्थान किसी प्रोफेसर को सस्पेंड कर रहा है? यदि नहीं तो खेल मंत्री का बयान क्यों?

खेल से सम्बन्धित सेक्शन ने टका-सा जवाब दिया, "कहीं किसी कार्यवाही की सूचना नहीं है और प्रोफेसर तो कोई है नहीं।" पाटिल उधेड़बुन में पड़े रहे। ऊपर खबर देना इस समय ठीक नहीं था, जब तक कुछ और विवरण हाथ में नहीं आ जाए। पर विवरण मिले कहाँ से? वे धान के ढेर में सुई तलाशने में जुट गए, पर कायदे से।

मलाई बाबू से मिलने जब वे गए तब तक उनके पास अविनाश कुमार और राकेश पुरी की आठ घण्टे की गुप्त बैठक की खबर आ चुकी थी। महानगरों के लिए अविनाश कुमार किन दूतों को विमान और रेल से भेज रहे थे, यह भी उन्हें पता चल चुका था। खेल से सम्बन्धित सभी संस्थाओं में फैले सभी सम्भावित स्कैंडलों का जायज़ा वे ले चुके थे। पर ऐसा कोई मुद्दा उन्हें नज़र नहीं आ रहा था जिसमें किसी प्रोफेसर के खिलाफ कार्यवाही हो रही हो, वह भी ऐसे मसले पर जिसे देशव्यापी मुद्दा बनाया जा सके, वह भी 'धमाकेदार'।

मलाई बाबू ऐसी किसी कार्यवाही का अता-पता न दे सके, क्योंकि डैडी पाटिल ने उन्हें किसी भी पदाधिकारी के विरुद्ध होने वाली कार्यवाही के बारे में पूछा था। आखिर श्री पाटिल ने सीधा प्रश्न कर डाला, "क्या आपके किसी पदाधिकारी को प्रोफेसर कहकर पुकारा जाता है, ऐसा जो काफी प्रसिद्ध हो?"

"प्रसिद्ध पदाधिकारी, प्रोफेसर..." मलाई बाबू के पल्ले बात नहीं पड़ी।

"जी हाँ, दरअसल मैं पता लगाना चाह रहा था कि किसी प्रसिद्ध प्रोफेसर के नाम से जाने जाते हुए व्यक्ति के खिलाफ ऐसी कार्यवाही तो नहीं हो रही जिसमें खेल मंत्री को हस्तक्षेप करना पड़े?"

"एक मिनट, एक मिनट!" मलाई बाबू चौकन्ने हो गए, "आप का मतलब खेल मंत्री के हस्तक्षेप से... शैलायन

के मामले की बात तो नहीं कर रहे आप?"

"शैलायन? वह जो..."

"हाँ-हाँ वही, बन्दर बने हुए! पर कार्यवाही तो उनके खिलाफ नहीं हुई है। ठहरिए, मैं बताता हूँ आपको..."

पहेली का हल लिए डैडी पाटिल चीफ के कमरे में घुसे। सारी बातें सुनने के बाद चीफ भी गम्भीर हो गए। लेकिन *धमाका* तक बात पहुँचाई किसने? कहीं शैलायन ने तो नहीं? उन्होंने शैलायन की गतिविधियों का विवरण मँगाया।

"लेकिन पाटिल, तुमने यह बातचीत टेप... ऊपर क्या रिपोर्ट जाएगी?"

"सर, महज़ इत्तेफाक!" पाटिल मुस्कराए, "क्रॉस कनेक्शन लग गया था, सो मैंने टेप कर लिया। आप तो जानते ही हैं, सर, मैं कानून का कितना पाबन्द हूँ।"

दो और दो चार होते देर नहीं लगी। शैलायन हरि से मिलने गए थे, हरि ने ज़रूर राकेश पुरी से मदद माँगी होगी, एसोसिएशन के पत्र के बारे में... बेचारे शैलायन, उस दिन जो लताड़ पड़ी थी उन्हें, आज भी याद है। भला हो श्री थेजा अंगामी का जिन्होंने अन्त में बात को रोक लिया था। "हमें आपके इरादों पर शक नहीं है, प्रोफेसर। पर समझदारी ज़रूरी है। हरि की बजाय मुझसे मिल लेते तो शायद यह बवण्डर न उठता।"

बवण्डर कोई खास उठा नहीं। हाँ, *धमाके* ने एसोसिएशन के नकार की खबर मय फोटो कॉपी के छापी। पर उसी दिन शाम की दूरदर्शन और आकाशवाणी की खबरों में यह खुलासा निकल चुका था कि प्राधिकरण इस मामले को खेल विभाग तक उठा चुका है। यही नहीं, उसने एसोसिएशन को भी अपनी मनाही पर पुनर्विचार करने की सिफारिश की है। सरकार इस मुद्दे के सारे पहलुओं से वाकिफ है, पर वह भारतीय ओलम्पिक एसोसिएशन के काम में बेवजह दखल नहीं देना चाहती। खबरों में इस बात पर भी खेद व्यक्त किया गया कि एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय दैनिक ने पूरे तथ्यों का पता लगाए बिना मामले को सनसनीखेज़ रूप से उठाने की कोशिश की।

मलाई बाबू का विनम्र टेलीफोन अविनाश कुमार को उनकी नियत प्रेस कॉन्फ्रेंस से एक घण्टे पहले ही मिल गया। मलाई बाबू ने उनसे समय माँगा था कि मॉस्को जाने वाले युवा अध्ययनदल में उनके योगदान के बारे में बात हो सके और जब चर्चा की गई तो मलाई बाबू ने प्राधिकरण का पक्ष स्पष्ट कर डाला और बड़ी ही मुलायम आवाज़ में कहा, "अविनाश बाबू, सब आप जैसे मूल्यों पर आधारित नीति के पक्षधर थोड़े ही हैं। *धमाका* को ही देखिए, कितने पूर्वाग्रह हैं उनके मन में हमारे प्रति। अरे, एक बार पूछ तो लिया होता राकेश जी ने हमसे।"

राकेश पुरी को आज भी विश्वास है कि उनके प्रेस की बिजली की सप्लाई से दो घण्टे छेड़-छाड़ जानबूझकर की गई थी ताकि टीवी की खबरों और अविनाश कुमार की अस्वस्थता के कारण रद्द हुई प्रेस कॉन्फ्रेंस, दोनों को वे नज़रअन्दाज़ न कर सकें। बिजली बोर्ड आज भी इस आरोप को निराधार ही बताता है।

राजा रिपुदमन सिंह को काफी सफलता से समझा दिया गया था कि शैलायन के केस की अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक कमेटी को सिफारिश करना, कैसे उनकी एसोसिएशन के और देश के हित में है। मन मसोसकर ही सही, वे इस बात के लिए तैयार हो गए थे। उनके सचिव ने उन्हें सही सलाह भी दी थी। "साहब, मनाही अगर मिलनी ही है, तो अं.ओ.क. से मिले – हमारा क्या लेना-देना है। और फिर मेडल मिलने पर कुछ वाहवाही तो हमारी भी होगी!"

* * *

कुल मिलाकर गेन्द को अन्तर्राष्ट्रीय कमेटी के कोर्ट में पहुँचा दिया गया था। शैलायन का भारतीय टीम में चयन अब एक अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दा बन गया था। आईओसी की पहली प्रतिक्रिया नकारात्मक ही रही, हालाँकि उनके अध्यक्ष ने अन्तिम फैसला देने से इनकार कर दिया। उनकी भूमिका थी 'वेट एण्ड वॉच'। 'वेट एण्ड वॉच' के लिए कई अन्य लोग तैयार नहीं थे। एफ्रो-एशियाई देशों ने इस बात को प्रतिष्ठा का मुद्दा बना लिया। खाटू में एक विशेष बैठक बुलाई गई जिसमें इन देशों ने चेतावनी दी कि आईओसी प्रोफेसर शैलायन के चयन को मंज़ूरी दे।

खेलकूद की दुनिया की सुपर पावर्स ने भी प्रचार माध्यमों के ज़रिए मौलिक मुद्दे उठाए। उनमें से मुख्य था अनुचित लाभ का। शैलायन को बन्दर का बदन मिल जाने से, उन्हें उनके प्रतियोगियों पर अनुचित बढ़त मिल गई थी। इसका जवाबी हमला यह कहकर किया गया कि जो देश मानव-निर्मित अनुचित लाभों जैसे एस्ट्रो-टर्फ, उन्नत प्रशिक्षण जिसमें संसाधनों पर खुलकर खर्च होता है, वगैरह के बारे में चुप्पी साध जाते हैं, उन्हें प्रकृति प्रदत्त लाभ के बारे में कुछ कहने का अधिकार नहीं है। शैलायन के प्रयोग को भी एक ऐसा ही प्रशिक्षण कार्यक्रम माना जाए जैसा धनी देशों में अत्याधुनिक कंप्यूटरों के सहारे होता है। क्या आज तक किसी धनी देश ने कंप्यूटर विश्लेषण के सहारे गरीब देशों के चैंपियन बनने लायक बच्चों की प्रतिभा को खोजने में मदद की है?

एक अमीर शेख ने तो यहाँ तक पेशकश की कि ऐसा ही प्रयोग उनकी पूरी वॉलीबॉल टीम पर करें या अन्य खिलाड़ियों पर करें ताकि अगले ओलम्पिक में इन महासत्ताओं के नुमाइन्दों को धूल चटा दी जाए। इन सारी सरगर्मियों में हरि ने धमकी दी

कि वे इस मामले को अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय तक ले जाएँगी, देश-विदेश के अखबारों में उनके लेख छपे कि कानूनी तौर पर शैलायन का खेलों में भाग लेना कैसे ज़रूरी है। राबिया जमाल की शोहरत भी बुलन्दी पर थी। कैसे उन्होंने शैलायन को कोच किया, उनका प्रदर्शन कैसा था, उनका रिकॉर्ड कैसा रहा। विडियो कैसेट पर उनका और शैलायन का कॉपीराइट हो गया। एक-एक फोटो के वे कसकर दाम वसूला करते और विवाद का भूखा समाचार जगत उसे हाथों-हाथ उठा लेता।

उन्नत देशों ने भी मोर्चाबन्दी की क्योंकि उनके कोचों ने जब शैलायन के प्रदर्शनों के आँकड़े और फोटो देखे तो वे सर पीटकर रह गए। शैलायन के हाथों दर्जनभर मैडल तो ज़रूर आने थे – दौड़ में, कूद में, जिमनास्टिक में और न जाने किस-किस विधा में।

यह लगभग तय था कि इस मुद्दे पर ओलम्पिक गतिविधि दो खण्डों में बँटेगी, विकसित देश एक ओर और विकासशील देश एक ओर। गुप्त मंत्रणाओं के दौर चले, समझौतों के प्रयास हुए, अन्त में निर्णय हुआ कि एथेंस में एक आपात बैठक बुलाई जाए और वह भी संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में।

* * *

यह सब होते हुए भी मेघना के साथ शाम के एक-डेढ़ घण्टे गुज़ारने के शैलायन के कार्यक्रम में कोई ढील नहीं पड़ी, और अब तो उसकी परीक्षाएँ भी सर पर आ चुकी थीं। उस दिन श्यामली भी उन दोनों के पास ही बैठी हुई थी। शैलायन फिज़िक्स का प्रश्न हल करने में मेघना की मदद कर रहे थे।

"देखो, गोला छूटने से तोप पीछे की ओर खिसक आती है। अब गोले का वज़न और गति, इन दोनों को गुणा करने से जो राशि होगी, वही तोप के वज़न और गति को गुणा करने से मिलेगी। अब तुम्हें तीन चीज़ें मालूम हैं – गोले का वज़न, गति और तोप का वज़न – बस, तोप की पीछे हटने की गति निकाल लो।"

"पर पापा, ऐसा होता क्यों है?"

"बताया तो बेटे, कई चीज़ें अनश्वर मानी जाती हैं जैसे ऊर्जा, वैसे ही मोमेंटम यानी संवेग।"

"वही जो भार और गति को गुणा करने से मिलता है?"

"बिलकुल ठीक! अब देखो, चलने से पहले तो तोप अपनी जगह पर थी और गोला अपनी, यानी संवेग शून्य। अब जैसे ही गोला आगे की ओर छूटा, उतना ही संवेग पीछे भी मिलना चाहिए, सो तोप पीछे खिसकी।"

"पर पापा, कई गन तो ऐसी होती हैं जिनमें गोली आगे छूटती है पर बन्दूक पीछे नहीं आती!"

"हाँ बेटे, वह है स्थिर यानी रेकॉइललेस गन। उसमें क्या होता है,

परिवेश उसके पीछे की ओर दिए गए धक्के को अपने में सोख लेता है या सह लेता है।"

"पापा, ऐसा और भी चीज़ों में होता है?"

"'और' यानी और विषयों में?"

"हाँ पापा, जैसे केमिस्ट्री, बायोलॉजी..."

"बेटे, ये अनश्वरता के सिद्धान्त हर जगह लागू होते हैं पर ऐसी अनश्वर मात्राएँ काफी कम होती हैं।"

"पापा, मुझे लग रहा था जैसे आपका दिमाग एकदम तेज़ हो गया, तो क्या उसकी वजह से तो आपका बदन ऐसा नहीं हुआ?"

"ऐसा कैसा?"

"जैसे धक्का लग के पीछे चला गया हो। उस दिन हमारी बायोलॉजी की किताब में तो था - आदमी, उसके पीछे गोरिल्ला, उसके पीछे चिम्पैंज़ी, उसके पीछे ओरांगुटान।"

शैलायन मेघना को एक-टक देखते रह गए थे... क्या सचमुच उत्क्रान्ति में ऐसा होता है? जैसे-जैसे मस्तिष्क का विकास होता है, शरीर... नहीं, लेकिन शरीर तो विकास ही करता है!

उन्होंने अपने आपको देर रात तक लाइब्रेरी में बन्द कर लिया था। श्यामली को उन्होंने अपने ही पास बुला लिया था। "श्यामू, शायद मेघना के मुँह से ही मेरी गुत्थी का समाधान निकला है।"

"वह कैसे?"

"देखो, मैं सोच रहा था कि अगर उसकी बात सही है तो जैसे-जैसे मस्तिष्क का मेधा के स्तर पर विकास होता जाएगा, शरीर का विकास पिछड़ना चाहिए पर आम जीवन में तो ऐसा नज़र नहीं आता। चिम्पैंज़ी के मस्तिष्क और शरीर की अपेक्षा मानव का मस्तिष्क और शरीर, दोनों ही उन्नत हैं। पर मेरे केस में देखो, वाकई जब मस्तिष्क मेधा के स्तर पर एक छलाँग आगे लगा गया, तो शरीर एक छलाँग पीछे लगा गया।"

"यानी तुम कहना चाहते हो कि धीमी नैसर्गिक उत्क्रान्ति की तुलना रेकॉइललेस गन से की जा सकती है, जिसमें मस्तिष्क तो आगे की ओर बढ़ता है, साथ ही शरीर का भी क्रमिक विकास होता रहता है और परिवेश उसे पीछे हटने नहीं देता। पर तुम्हारे प्रयोग में, चूँकि तुम लोगों ने धीमी नैसर्गिक उत्क्रान्ति की बजाय मस्तिष्क के स्तर पर एक त्वरित लम्बी छलाँग आगे की ओर लगा दी है, तुम्हारा शरीर एक पग पीछे की ओर चला गया।" श्यामली ने कहा।

"हाँ, तुम्हारा अनुमान सही है, और इसके कई मायने निकलते हैं। जैसे यह कि अगर मैं शरीर के स्तर पर एक छलाँग आगे की ओर लगा देता तो मेरा दिमाग शायद चिम्पैंज़ी जैसा हो जाता।"

श्यामली के बदन में झुरझुरी-सी दौड़ गई। भगवान का शुक्र है, ऐसा नहीं हुआ। शैलायन अपनी रौ में कहते गए – "इसका एक और निहितार्थ यह है कि अगर मैं मेधा के स्तर पर एक और छलाँग आगे लगा दूँ तो मेरा शरीर उसी अनुपात में और अधिक पीछे की ओर..."

"खाक पीछे की ओर!" इतने दिनों की व्यथा श्यामली के मुँह से निकल ही पड़ी। "अरे, यह निहितार्थ तुम्हारी समझ में क्यों नहीं आता कि अपनी पुरानी मेधा के स्तर पर छलाँग लगाकर वापस आ जाओ तो तुम्हारा शरीर अपने पुराने रूप में वापस आ जाएगा और तुम पहले जैसे हो जाओगे। यह भी तो सम्भव है! कभी-कभार तो अपना या कम-से-कम अपनों का ख्याल कर लिया करो!"

* * *

श्यामली से आगे चर्चा करने में शैलायन को खास मतलब नहीं दिखा। वह नहीं समझेगी वैज्ञानिक गवेषणा के रोमांच को। वापस पहले जैसी स्थिति में आने में क्या धरा है? पर अगर एक और कदम पीछे जा पाएँ और कहे के मुताबिक अगर प्रयोग सफल हो जाए तो कितनी क्रान्तिकारी खोज होगी। लेकिन प्रकट में उन्होंने प्रतिवाद नहीं किया और श्यामली की बात को मान लिया। अध्यात्मानन्द जी परसों आने वाले थे। उनके साथ इस नए विचार पर बहस करना ज़रूरी था। पता नहीं, उन्हें इस परिस्थिति की जानकारी थी या नहीं। अखबार

तो उन्होंने सालभर नहीं पढ़ा होगा और रास्ते में भी कोई उनसे इस बात पर शायद ही चर्चा करे। खबर पुरानी हो गई है, क्यों न उन्हें एक आश्चर्य का झटका दिया जाए? विचार बुरा नहीं है।

खुदाबख्श को शैलायन ने सख्त हिदायतें दीं कि अध्यात्मानन्द जी को एयरपोर्ट से सीधा उनके आश्रम लाना है और इस परिवर्तन के बारे में उनसे ज़रा भी बात नहीं करनी है। स्वामी जी को पहले से पता हो और वह खुद पूछें तो बात दूसरी है। फिर उन्हें बता दें कि शैलायन आश्रम में उनका इन्तज़ार कर रहे हैं। खुदाबख्श ने सहमति में गर्दन हिलाई। थोड़े-से खेल में हर्ज़ क्या है?

पर खेल तो तब चौपट होता नज़र आया जब खुदाबख्श को दर्शक दीर्घा में श्यामली किसी के इन्तज़ार में खड़ी दिखी। 'स्वामी जी से मिलने आई होंगी क्योंकि उनके अन्य कोई मेहमान तो आने वाले नहीं थे'। अब शैलायन को भी फोन करने का क्या मतलब। खुदाबख्श ने एक ठण्डी साँस खींची और उड़ान उतरने की प्रतीक्षा करने लगे।

श्यामली वाकई स्वामी जी की प्रतीक्षा में थी। उसने भी शैलायन से आगे बहस करने की व्यर्थता को महसूस किया था और शैलायन के ऊपरी तौर पर उनसे सहमत होने के झाँसे में वह नहीं आई। उसके विचार से यह शोध का चक्कर बहुत हो चुका था और अब बेहतर था कि अध्यात्मानन्द जी शैलायन को पुराने रूप में लाने की चेष्टा करते।

श्यामली को अपनी प्रतीक्षा में खड़े पाकर अध्यात्मानन्द जी को आश्चर्य हुआ। श्यामली उन्हें पास के ही होटल में ले गई और उन्हें विस्तार से सारी बातें बताईं। रुँधे गले से उसने स्वामी जी से अनुरोध किया कि वह शैलायन को मस्तिष्क की उत्क्रान्ति के अगले सोपानों पर न ले जाएँ।

"मैं तो उनके ओलम्पिक तमाशे को भी नहीं चाहती। जानते हैं, कैसा बवाल खड़ा हो गया है? अगले गुरुवार को ही एथेंस में बैठक है, इस विषय पर।" ओलम्पिक की बात पर स्वामी जी ठहाका लगाकर हँस पड़े। श्यामली को उन्होंने समझाया कि वह निराश न हो, यह भी बताया कि उन्हें अपने प्रयोग के ऐसे परिणाम की उम्मीद नहीं थी और वे देखेंगे कि इस बारे में क्या किया जा सकता है।

श्यामली से मिलने के बाद जब वे आश्रम पहुँचे तो उन्होंने शैलायन को अपनी प्रतीक्षा में पाया। शैलायन को देखकर वे एक क्षण अवाक-से रह गए। किसी के बन्दरनुमा हो जाने की बात सुनना और उसे वाकई बन्दर-रूप में देखना, दो अलग-अलग बातें थीं। उन्हें अवाक देख शैलायन को विश्वास हो गया कि स्वामी जी को इस परिवर्तन के बारे में कुछ मालूम नहीं था। अध्यात्मानन्द जी उनकी इस धारणा को बदलने के लिए

उत्सुक नहीं थे। वैसे भी श्यामली ने खुदाबख्श से निवेदन किया था कि वे शैलायन को उनके हवाईअड्डे जाने और स्वामी जी से मिलने के बारे में कुछ न बताएँ। दो पार्टियों के बीच फँसे बेचारे खुदाबख्श ने यही तय किया कि वे चुप्पी साध जाएँ।

अध्यात्मानन्द जी को वही सारी बातें एक बार और विस्तार से सुननी पड़ी, पर शैलायन के नज़रिए से। उनका नया सिद्धान्त, उसे जाँचने की उनकी उत्सुकता, यह सब देखकर एक मुस्कान स्वामी जी के चेहरे पर दौड़ गई। एक ही वास्तविकता का दो अलग नज़रियों से विवरण कितना अलग हो सकता है। विस्तृत चर्चा और विचारों के आदान-प्रदान के बाद यही तय हुआ था कि मंगलवार को अगला प्रयोग किया जाएगा जिसमें शैलायन के सिद्धान्त के सत्यापन के लिए कदम उठाए जाएँगे।

"पर मैं शरीर में बहुत पीछे छलाँग नहीं लगाना चाहता, स्वामी जी।" शैलायन ने कहा था क्योंकि ओलम्पिक का भी मामला है। "ओलम्पिक खत्म हो जाने के बाद हम लोग स्वतंत्र हो जाएँगे, चाहे जितने आगे जाएँ या पीछे।"

* * *

स्वामी जी के मन में उमड़ते-घुमड़ते विचारों का पता न शैलायन को था, न श्यामली को। उन्हें भी करीब-करीब उसी किस्म की लताड़ अपने गुरुओं से सुननी पड़ी थी जैसी शैलायन को थेजा अंगामी के कमरे में सुननी पड़ी थी। सुदूर हिमालय के एकान्तवास में जब बेचारे अध्यात्मानन्द जी ने अपने प्रयोगों का ज़िक्र किया तो उनके गुरुओं ने बड़ी ही रुखाई से इस खबर का स्वागत किया था। फिर उस रुखाई के बाद उनसे पूछा गया था कि क्या उन्हें एहसास है कि वे कैसी खुराफात कर चुके हैं। यह भी कि क्या उन्हें यह पल्ले नहीं पड़ा कि प्रकृति में उत्क्रान्ति की धीमी गति का अपना एक तर्कशास्त्र है, अपनी एक संगति है – उन्हें इस चक्र में हस्तक्षेप करने की कोई आवश्यकता नहीं। जहाँ तक अतिमानव का सवाल है, उसके लिए सही परिवेश तैयार नहीं हुआ है, और फिर मामला पूरी मानव जाति की उत्क्रान्ति का है, एक-दो मानवों का नहीं।

उसी सख्ती को जारी रखते हुए उन्हें फरमाया गया था कि वापस जाने के बाद पहला काम वे यह करें कि शैलायन को अपने पुराने रूप में ले आएँ। जहाँ तक शैलायन के शरीर का सवाल था, उसे वे खुद वापस जाकर देख लें। वापस आकर अध्यात्मानन्द जी ने जो देखा, वह उनके लिए काफी विस्मय की बात ज़रूर थी। उन्होंने तय किया कि वे अब आदेश के मुताबिक अपना काम करेंगे। जहाँ तक ओलम्पिक का सवाल था, उनके विचार से शैलायन अनावश्यक रास्ते पर भटक गए थे।

ओलम्पिक में देश के द्वारा बेहतर प्रदर्शन का यह कतई रास्ता नहीं है और ऐसे शॉर्ट-कट देश का कोई भला नहीं करते। इससे बेहतर यही है कि समाज के उपेक्षित वर्गों में पनपती और परवान चढ़ी प्रतिभा को खोजकर, उसे उचित प्रशिक्षण और प्रोत्साहन दिया जाए।

नियत दिन शैलायन और अध्यात्मानन्द फिर एक बार प्रयोगशाला में बैठे। प्रयोग के परिणाम का इन्तज़ार तीनों को था पर अलग-अलग सन्दर्भों में। श्यामली सशंकित, शैलायन उत्सुक और स्वामी जी शान्त थे।

आज शैलायन रात दो बजे तक घर नहीं लौटे। वे प्रयोगशाला में ही बैठे अपने शरीर में होने वाले परिवर्तनों का निरीक्षण करने को आतुर थे। पिछली बार तो किसी को अनुमान ही नहीं था कि ऐसा कोई परिवर्तन होगा, सो यह निरीक्षण हो ही नहीं पाया था। बस, आँख लगी और सुबह उठे तो आदमी के शरीर से बदलकर बन्दर का शरीर! परिवर्तन क्रमिक था या दशा यानी फेज़ परिवर्तन की भाँति हठात, इसका उत्तर दोनों प्रयोगकर्ताओं में से किसी के पास नहीं था।

प्रयोगशाला के सोफे पर बैठे-बैठे उन्हें एहसास ही नहीं हुआ कि कब उनकी आँख लग चुकी थी। अध्यात्मानन्द जी ने उन्हें जगाए रखने का कोई प्रयत्न नहीं किया। वे तो दरअसल उस नींद को गहरा कर रहे थे। सोफे पर लेटे शैलायन को अपलक निहार रहे थे। उनके शरीर में अन्दरूनी परिवर्तन क्या हो रहे थे, और न ही बाहरी बदलावों को जानने की कोई उत्सुकता स्वामी जी ने दिखाई। पर यह तो उन्होंने अपनी आँखों से देखा कि कैसे शैलायन का सारा शरीर एक झटके में प्रागैतिहासिक मानव के रूप में बदला और दूसरे झटके में उनके सामान्य रूप में आ गया। स्वामी जी रुके, कहीं इससे आगे... पर नहीं, आधे घण्टे बाद भी शैलायन का शरीर पूर्ववत स्थिति में बना रहा।

स्वामी जी के मुँह पर मन्द स्मित तैर गया। उन्होंने प्रयोगकक्ष से बाहर निकलकर शैलायन के घर फोन लगाया। सुबह के कोई तीन बजे थे।

'ट्रिंग ट्रिंग!'

श्यामली ने अधीरता के साथ फोन उठाया। "श्यामली, मैं अध्यात्मानन्द बोल रहा हूँ। आप आश्वस्त हो जाएँ, प्रयोग सफल रहा है।"

"मैं... मैं आपका..."

"आभार प्रकट करने की कोई आवश्यकता नहीं है, श्यामली।"

श्यामली को लगा जैसे उनके शब्द लम्बी गुफा के सुदूर उजियारे कोने से आ रहे हों। स्वामी जी कहते गए, "मैं आपकी मनोदशा समझ रहा हूँ, पर इस वक्त यह आवश्यक है कि आप यहाँ आ जाएँ। मैं खुदाबख्श को

आपके पास भेज रहा हूँ। आपके आने के बाद मैं आवश्यक काम से बाहर जाना चाहूँगा।"

अपने आँसू पोंछ श्यामली तैयार हुई। खुदाबख्श अब आते ही होंगे। उन्होंने मेज़ पर से शैलायन का एक फोटो उठाकर अपने पर्स में डाला और रसोईघर का रुख किया। सोती डुखनी को जगाकर कुछ निर्देश दिए और गाड़ी में बैठ गई। उसका मन मानो हवा में तैर रहा हो। प्रयोगकक्ष के बाहर बैठे स्वामी जी उसे देवता समान महसूस हुए। वह मन ही मन उस घटना को याद कर झेंप गई जब इन्हीं स्वामी जी को उसने 'मरदूद' की उपाधि दी थी।

"क्या वो बिलकुल...?" उसके अपेक्षित प्रश्न को बीच में ही काटते हुए स्वामी जी ने कहा, "जी श्यामली, शैलायन बिलकुल सौ फीसदी पूर्व रूप में आ गए हैं। पर पहले दो महत्वपूर्ण बातें - पहली यह कि वे शायद एक घण्टा और सोएँ, और दूसरी कि इस परिवर्तन का निर्णय मेरा अपना था और वह भी आपके सुझाव के पूर्व लिया जा चुका था। पर शैलायन शायद इस बात को न मान पाएँ, अतः उनके उठने पर यह चिट्ठी उन्हें दे दें।"

"पर आप?" उनकी प्रश्नार्थक मुद्रा के जवाब में हँसकर स्वामी जी ने कहा, "शायद मेरा यहाँ से जाना ही नियत था, पर आप चिन्ता न करें, खुदाबख्श मुझे छोड़कर चले आएँगे।"

"मैं तो आपका..." श्यामली को शब्द ही नहीं सूझ रहे थे।

"मैंने कहा न श्यामली, आभार प्रकट करना बिलकुल गैर-ज़रूरी है।"

उन्होंने अपनी घड़ी की ओर इशारा किया, "मेरे ख्याल में अब मेरे जाने का समय हो गया है, आपकी इजाज़त हो तो मैं चलूँ?"

"जी, पर आप जा कहाँ रहे हैं?" मुश्किल से श्यामली ने पूछा।

"एयरपोर्ट।" संक्षिप्त उत्तर मिला।

शैलायन की समझ में नहीं आ रहा था कि वे सपना देख रहे थे या सत्य। सामने उन्हें एकटक निहारती श्यामली पर उनकी पहली नज़र पड़ी थी और दूसरी, सामने रखे आईने पर। उन्होंने खुद को ज़ोर की चिकोटी काटी। वे जो भी देख रहे थे, सत्य था पर प्रयोगशाला में श्यामली? स्वामी जी? उन्होंने चारों ओर नज़र दौड़ाई। स्वामी जी नदारद रहे। रात के प्रयोग की बातें उनके दिमाग में तैर गई थीं। स्वामी जी को यहाँ होना चाहिए था। और यह परिवर्तन भी... उन्होंने फिर एक बार आईने में खुद को देखा।

"यह तुम ही हो।" श्यामली ने उनकी फोटो सामने की, "अपने पुराने रूप में।"

"तो यह तुम्हारी करतूत है!" शैलायन बिफर पड़े, "क्या ज़रूरत थी तुम्हें हमारे प्रयोग में दखलअन्दाज़ी देने की? और वो स्वामी जी? स्वामी जी कहाँ हैं?"

और श्यामली की आँखें अपमान से भर आईं। पर यह वाद-प्रतिवाद का समय नहीं था। शैलायन की यह प्रतिक्रिया स्वाभाविक ही थी। उसने अपने आप को सम्भाला और बोली, "स्वामी जी ने तुम्हारे नाम यह चिट्ठी दी है।" हैरानी से शैलायन ने चिट्ठी पढ़ी –

'प्रिय शैलायन,

हमारे पिछले प्रयोग के बाद भी मैं सवेरे की उड़ान से चला गया था, आज भी वही कर रहा हूँ। गन्तव्य भी वही है। पिछले प्रयोग के परिणाम दोनों के लिए अनपेक्षित थे, इस प्रयोग के परिणाम तुम्हारे लिए अनपेक्षित हैं। तुम्हारा गुस्सा लाज़मी है और यह गलतफहमी भी कि श्यामली इसके लिए ज़िम्मेदार है। पर यह भ्रम मन से निकाल दो। यह निर्णय मैंने उससे मिलने के पहले ही ले लिया था। इसमें तुम्हारे खिलाफ किसी साज़िश की कोई सोच नहीं है। इसके कारण अलग ही हैं। अगर हम लोग फिर मिले तो मैं ज़रूर बताऊँगा, पर अब पता नहीं हम लोग मिलेंगे भी या नहीं। तुम्हारे साथ इस प्रयोग के सन्दर्भ में हुई पहचान और हमारी चर्चाएँ एक सुखद और अविस्मरणीय अनुभव रहा, पर अब उसके समाप्त होने का समय शायद आ गया है। यह तो तुमने पढ़ा ही होगा –

यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महोदधौ।

समेत्य च व्यपेयातां तद्वद्भूतसमागमः॥

जिस तरह लकड़ी के दो खण्ड महासागर में तैरते-तैरते एक-दूसरे के पास आ जाते हैं और पास आकर

फिर अलग हो जाते हैं, संसार-रूपी-समुद्र में भी जीवों का मिलना-बिछड़ना होता रहता है। बस, हम लोग भी अब अपने अलग-अलग मार्गों पर निकल रहे हैं। हाँ, जाते-जाते तुम्हारे लिए एक सलाह ज़रूर है कि उत्क्रान्ति को अपनी राह चलने दो।

तुम्हारा अध्यात्मानन्द'

***

फटी-फटी आँखों से शैलायन उस पत्र को देखते रह गए। श्यामली ने मौन भंग किया, "घर चलें?"

गाड़ी में बैठते-बैठते शैलायन ने श्यामली के हाथ के फ्लास्क की ओर देखकर पूछा, "इसमें क्या है?"

"हमारा नींबू पानी।" श्यामली ने पूछा, "पियोगे?"

"नहीं..." भारी स्वर में शैलायन ने कहा, "इस वक्त, मेरे ख्याल से, मुझे सिगरेट की ज़रूरत है। खुदाबख्श..."

खुदाबख्श की आँखें जीवन में सिर्फ दो बार छलकी थीं। एक बार जब बेटी जन्मी थी और आज, जब उन्होंने शैलायन को सिगरेट और लाइटर थमाया था।

अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के अध्यक्ष ने जब अपने संस्मरण लिखे तो उन्होंने राजा रिपुदमन सिंह के उस टेलेक्स का मिलना अपने जीवन की सबसे यादगार घटना बताई थी जिसमें शैलायन के ठीक हो जाने का ज़िक्र था। आपात बैठक के ठीक एक दिन पहले उनको वह पोस्ट मिला था। उन्होंने शैलायन को भेजे अपने पत्र में श्यामली और अध्यात्मानन्द का लाख-लाख शुक्रिया अदा किया था जिन्होंने ओलम्पिक संगठन को एक मुश्किल कगार से उभार लिया था। पर हाँ, उन्होंने यह पेशकश समिति की ओर से सहर्ष की थी कि शैलायन, श्यामली और मेघना, यही नहीं, राबिया जमाल भी मय परिवार समिति के अतिथियों के रूप में अगले ओलम्पिक देखने ज़रूर आएँ।

शैलायन तय नहीं कर पा रहे थे कि यह घटना वाकई शुक्रिया अदा करने योग्य थी या नहीं। उनके दिमाग में द्वन्द्व चलता रहता था कि क्या उन्होंने ज्ञान के नए भण्डार की थाह लेने का मौका खो दिया है या नहीं। मेघना के दिमाग में ऐसी कोई उधेड़बुन नहीं थी। वह खुश थी कि उसके पापा भी उसे वापस मिल गए और ओलम्पिक देखने का मौका भी। अच्छा हुआ पापा वापस आदमी बन गए, ओलम्पिक मेडल में क्या रखा है, कहीं हमेशा के लिए बन्दर रह जाते तो?

श्यामली खुश थी पर उसके पास शैलायन के द्वन्द्व का समाधान नहीं था। वे अक्सर अन्तर्मुखी हो जाया करते। उनके बीच के सम्बन्ध अभी भी सहज नहीं हो पाए थे। कई बार देर रात तक शैलायन अपने अध्ययन-कक्ष में बैठे रहते। श्यामली को उन्हें जगाकर ज़बरदस्ती सोने के कमरे में लाना पड़ता था। उस रात भी शैलायन

अपने अध्ययन-कक्ष में देर रात बैठे हुए थे। अचानक दरवाज़ा खुला और श्यामली आई, और उनके पीछे अध्यात्मानन्द जी। शैलायन चौंके, "अध्यात्मानन्द जी, आप! मैंने तो उम्मीद ही..."

"छोड़ दी थी, यही न?" स्वामी ने स्मित किया, "मुझे आना पड़ा तुम्हारे मन के अन्तर्द्वन्द्व के कारण। तुम खुश नहीं हो।"

"आपने अपना वचन नहीं निभाया, स्वामी जी। यही नहीं, हमने कितना बड़ा अवसर खो दिया एक नए आविष्कार का, नए अध्ययन का..." शैलायन की बेसब्री होठों पर आ ही गई।

"कई बार ज्ञान के साथ-साथ अन्य भावनाओं का भी विचार करना पड़ता है, शैलायन," स्वामी जी बोले।

"हाँ-हाँ, भावनाएँ! फिज़ूल की बातें! आप तो विज्ञान के छात्र रह चुके हैं! आपका यह कहना..."

"तुम स्वयं केन्द्रित रहे... कभी मेरा ख्याल किया?" श्यामली ने कहा।

"हाँ, तुम्हारा ख्याल? क्या कमी थी तुम्हें? मैं क्या कहीं भागा जा रहा था? और मान लो, मैं एक-दो साल के लिए कहीं बाहर गया होता तो..."

"ये ऐसे नहीं समझेंगे, श्यामली!" अध्यात्मानन्द क्रोधित हो गए, "ठीक है! ज्ञान के पिपासु! तुम्हें अध्ययन ही करना है न, लो करो! और निकालो अपने मन की भड़ास!" उन्होंने हाथ के जल को लेकर अभिमंत्रित किया और श्यामली पर छिड़का।

जब तक शैलायन कुछ समझ पाते, श्यामली की जगह एक बन्दर ने ले ली थी, नहीं यह तो चिम्पैंज़ी भी नहीं था। उन्होंने फटी-फटी आँखों से देखा। उनके सामने एक ओरांगुटान खड़ा था, श्यामली के कपड़े पहने और स्वामी जी अन्तर्ध्यान हो चुके थे। ओरांगुटान मुस्कराया और शैलायन से दूर जाने लगा। "यह लो, मैं हूँ तुम्हारे प्रयोग की सफलता!" दूर-दूर-दूर, वह ओरांगुटान शैलायन से बहुत दूर होता जा रहा था।

"नहीं!" शैलायन चीखे, "श्यामू!"

* * *

"क्या हुआ? यूँ चिल्ला क्यों रहे हो?" श्यामली उनके कन्धे झकझोर रही थी। उन्होंने देखा श्यामली उनके सामने, उनके नज़दीक, मानव रूप में मौजूद थी। हमेशा की तरह, हमेशा से। उन्होंने आँखें मलीं। श्यामली अपनी जगह बरकरार रही। वह ओरांगुटान और स्वामी जी... शैलायन आश्वस्त हुए - यह एक स्वप्न था।

श्यामली को बाहों में भरकर उन्हें यकीन आया। उन्होंने उसके होंठ चूम लिए। हैरान श्यामली कृत्रिम गुस्सा दिखाते हुए बोली, "क्या कर रहे हो?"

"कुछ नहीं, शीरीं लबों का मतलब भूल गया था। एक साथी का मतलब भूल गया था। फिर याद कर रहा हूँ।

मुझे माफ कर सकोगी, श्यामू?" शैलायन ने सजल आँखों के साथ कहा। और इस बार शैलायन के सुलझे हुए अन्तर्द्वन्द्व की मुहर श्यामली ने उनके होठों पर लगा दी।

(सन् 1980 में लिखी गई)

सतीश बलराम अग्निहोत्री: भारतीय प्रशासनिक सेवा के भूतपूर्व अधिकारी और अब आई.आई.टी. मुम्बई में प्राध्यापक। जन्म रत्नागिरी ज़िले के देवरुख गाँव में हुआ। बचपन बिहार के दरभंगा शहर में गुज़रा जहाँ स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई की। इसके बाद आई.आई.टी. मुम्बई से फिज़िक्स और फिर पर्यावरण विज्ञान में एम.टेक. किया। 1980 से भारतीय प्रशासनिक सेवा में ओडिशा राज्य एवं केन्द्र सरकार में कई विशिष्ट पदों पर 35 साल सेवारत रहे। हिन्दी में विज्ञान कहानियाँ और लेख लिखने की शुरुआत तब की जानी-मानी पत्रिका 'धर्मयुग' से हुई। यह विज्ञान-कथा भी उसी युग में लिखी गई अप्रकाशित रचना है। उनकी रचनाएँ www.satishagnihotri1955.in पर उपलब्ध हैं।

सभी चित्र: उर्वी: चित्रकार, विज़ुअल कलाकार और डिज़ाइनर हैं। सृष्टि इंस्टिट्यूट ऑफ आर्ट एण्ड डिज़ाइन टेक्नोलॉजी, बैंगलोर से अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद अब वे अपने काम के ज़रिए एनिमेशन, मूविंग इमेजिज़, कहानी कहन और कविता का सहारा लेते हुए शिक्षा, सामाजिक न्याय और संरक्षण को जानने-समझने की कोशिश कर रही हैं।